टेंडर हार्टहाई स्कूल सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़
कक्षा- चौथी विषय-हिंदी साहित्य
अध्यापिका- सुमन शर्मा

पुस्तक- नवतरंग-4
पाठ-5 ('सवारी हूँ मैं बड़ी निराली') भाग 1

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा-चार की हिंदी साहित्य की पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ-32 पर लिखे पाठ-'सवारी हूँ मैं बड़ी निराली' जोकि एक साइकिल की आत्मकथा है, को पढ़ेंगे। साइकिल ने यहाँ अपनी आत्मकथा में, अपने इतिहास तथा स्वयं के महत्त्व के बारे में व अपने उपयोग के बारे में बताया है। यह पाठ आपको 20.5.24 को भेजा जाएगा।

बच्चो! आप अपनी पुस्तक का पृष्ठ-32 खोल-कर रखें और अभ्यास-पुस्तिका भी खोलें। मैं पाठ के बीच में से कुछ प्रश्न पूछती जाऊँगी, आप उन प्रश्नों के उत्तर अपनी पुस्तिका में लिखेंगे। अब आप पाठ को पढ़ने, समझने तथा लिखने के लिए तैयार हो जाएँ।

बच्चो! सर्वप्रथम हम 'आत्मकथा' शब्द का अर्थ जान लेते हैं। यह दो शब्दों के मेल से बना है— आत्म + कथा। 'आत्म' का अर्थ है 'अपनी' तथा 'कथा' का अर्थ है 'कहानी'। जब कोई व्यक्ति अपने जीवन के वृत्तान्त को या जीवनी के बारे में लिखता है, उसे आत्मकथा कहते हैं। कोई भी अपनी आत्मकथा लिख सकता है।

बच्चो! इस पाठ में हमें एक साइकिल अपने बारे में बता रही है। जब यातायात के साधन नहीं थे तब

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 20.5.24
PAGE

कक्षा- चौथी विषय-हिंदी साहित्य (पाठ-5) पृष्ठ-2
शिक्षिका- सुमन शर्मा (दिनांक-(20.5.24)

साइकिल का बोल-बाला था। लेकिन आज के नए-नए आधुनिक यातायात के साधनों ने हमारे दौड़ते-भागते जीवन को आसान तो बनाया है, साथ ही कहीं न कहीं इनके कारण पर्यावरण और मानव के स्वास्थ्य पर बेहद बुरा असर पड़ रहा है। अत: हमें अपने जीवन और प्रकृति को ध्यान में रखते हुए ऐसे वाहनों का उपयोग करना चाहिए जो हमारी सेहत और पर्यावरण दोनों के लिए लाभकारी हो। ऐसा उपयोगी वाहन साइकिल है।

तो आइए! साइकिल के बारे में पढ़ते हैं। इसे हलका-सा पैडल मारो तो सर्र SSS... से चल देती है। यह थोड़ी-सी जगह में बिना शोर मचाए अपना रास्ता बनाती हुई खेत-खलिहान, ऊबड़-खाबड़ रास्ते से भी निकल सकती है। साइकिल चलाने वाले की भी तारीफ़ होती है जब दो पहियों पर अपना संतुलन बनाए वह जा रहा होता है।

साइकिल कहती है कि अखबार बेचने वाले, रद्दी वाले, दूधवाले, चाकू-छुरी तेज़ करने वाले और फल-सब्ज़ी, पौधे वाले आदि लोगों की मैं चलती-फिरती दुकान हूँ। डाकिए तो आज भी मेरे साथ ही घर-घर जाकर पत्र बाँटते हैं। आपसे मेरा परिचय 'साइकिल' या 'बाइसिकिल' के नाम से है। मैं दो पहियों की सवारी हूँ।

बच्चो! यहाँ तक आपने पाठ को ध्यान से पढ़ा, सुना और समझा होगा। अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप 3 मिनट का अंतराल लेंगे और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी पुस्तिका पर लिखेंगे।

प्रश्न 1. साइकिल कैसे रास्तों से आसानी से निकल सकती है? (पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा - चौथी शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-5) दिनांक - 20.5.24

प्रश्न 2. साइकिल किन लोगों की चलती-फिरती दुकान है?
प्रश्न 3. साइकिल को और किस नाम से पुकारते हैं?

बच्चो! आपके अंतराल का समय समाप्त हुआ। अब मैं इन प्रश्नों के उत्तर बताऊँगी। आशा है आप भी इन प्रश्नों के उत्तर लिख चुके होंगे।

उत्तर 1. साइकिल खेत-खलिहान, ऊबड़-खाबड़ रास्तों से आसानी से निकल सकती है।
उत्तर 2. साइकिल अखबार वाला, रद्दीवाला, दूधवाला, चाकू-छुरी तेज़ करने वाला, पौधेवाला और सब्ज़ी-फलवाले आदि लोगों की चलती-फिरती दुकान है।
उत्तर 3. साइकिल को बाइसिकिल के नाम से भी पुकारा जाता है।

बच्चो! अब मैं पाठ को आगे पढ़ना आरम्भ करती हूँ। आप इसी प्रकार रुचि बनाए रखें। आपने देखा होगा कि कुछ सवारियाँ मशीन की या पशुओं की सहायता से चलती हैं। जैसे- कार, मोटर साइकिल, बस, ट्रक आदि वाहन मशीन की सहायता से चलते हैं। भैंसा, बैल, घोड़े, खच्चर की सहायता से भी कई वाहन चलाए जाते हैं।

पाठ में साइकिल अपने बारे में लिख रही है कि मैं तो केवल सवार की मरज़ी से ही चलती हूँ। सवार द्वारा ब्रेक लगाए जाने पर झट से रुक जाती हूँ। इससे सवार और मुझे, दोनों को ही आनंद आता है। कभी-कभी तो पूरा परिवार ही मेरी सवारी करने हवा खाता हुआ निकल पड़ता है।

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा - चौथी शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-5)

साइकिल कह रही है कि मेरी घंटी की सुरीली आवाज़ सबके कानों को अच्छी लगती है जबकि मोटर गाड़ियाँ तेज़ आवाज़ में भोंपू बजाती हुई जाती हैं। इस भोंपू की आवाज़ से अक्सर लोग परेशान हो जाते हैं। साइकिल अपनी घंटी से अपने आने की सूचना दूसरों को देकर तंग से तंग संकरी जगह से चुपचाप निकल जाती है।

बच्चो! आपके पास भी तो अपनी साइकिल होगी! छोटे बच्चे तीन पहिए वाली साइकिल को बड़े चाव से चलाते हैं। साइकिल चलाते समय ये बच्चे अपने आपको किसी बादशाह से कम नहीं समझते। उनके चेहरे की खुशी छिपाए नहीं छिपती है। साइकिल को स्वयं पर गर्व महसूस होता है कि वह छोटे बच्चों की खुशी का कारण बनी है।

बच्चो! यहाँ आप तीन मिनट का अंतराल लेंगे और अब मैं प्रश्न पूछूँगी उनके उत्तर आप अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न 1. साइकिल कैसे रास्तों से चुपचाप निकल जाती है?
प्रश्न 2. साइकिल को स्वयं पर गर्व कब होता है?

बच्चो! आपके अंतराल का समय समाप्त हुआ। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर-1. साइकिल तंग संकरी जगह से चुपचाप निकल जाती है।

उत्तर-2. साइकिल चलाकर बच्चे स्वयं को बादशाह से कम नहीं समझते हैं और उनकी खुशी छिपाए नहीं छिपती। इसे देखकर साइकिल को स्वयं पर गर्व महसूस होता है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा- चौथी शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-5)

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं समाप्त करते हैं। पाठ का शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ाया जाएगा। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दे रही हूँ। इस कार्य को सभी छात्र अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य :- पढ़ाए गए पाठ को सभी बच्चे उच्च स्वर में पढ़ेंगे। पृष्ठ-35 पर लिखे शब्द-अर्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

बच्चों के अभिभावकों से अनुरोध है कि वे अपने बच्चे की कार्य करने और पाठ को पढ़ने में मदद करें। कार्य सुलेख के रूप में लिखें।

धन्यवाद।

* *

अंतिम पृष्ठ (पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner